शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'अनुत्तरयोगी : तीर्थंकर महावीर' उपन्यास का अनुशीलन

डॉ. श्रीमती दीपा चौरसिया
डॉ. परमेश्वर दत्त शर्मा शोध संस्थान
श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

जीवन जितना विशाल है, उतना ही उपन्यास का क्षेत्र विस्तृत है। उपन्यास जीवन के साथ अग्रसर होता जा रहा है। उपन्यास आधुनिक युग की एक सशक्त विधा है। प्राचीन युग में जो महत्व महाकाव्यों का था, वही आधुनिक युग में उपन्यास का है। 'अनुत्तरयोगी तीर्थंकर महावीर' गद्य में सृजन किया गया एक महाकाव्य है। अनुत्तरयोगी उपन्यास कोई पुराण नहीं है, जो केवल जैनियों के लिये या फिर मंदिर के किसी अलमारी की शोभा बढ़ाती रहे। अनुत्तरयोगी के महावीर न तो जैन हैं, न अजैन हैं, न ब्राह्मण हैं, न श्रमण हैं, बल्कि वे अपने समय के आर्यावर्त की भूमि पर स्वेच्छा से आविर्भूत हुए। प्रस्तुत शोध पत्र में वीरेन्द्र कुमार जैन द्वारा विरचित 'अनुत्तर योगी : तीर्थंकर महावीर उपन्यास' का अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तावना

पद्य में जो स्थान और महत्व जो महाकाव्य का होता है, गद्य में वही स्थान और महत्व उपन्यास को प्राप्त है। चाहे पद्य साहित्य हो अथवा गद्य साहित्य, साहित्यकार की दृष्टि भाव प्रधान विचारोत्तेजक एवं घटना संकुल जीवन पर ही रहती है। जीवन में हर घटना स्मरणीय एवं प्रभावमयी नहीं होती, किन्तु कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं, जिनका प्रभाव आजीवन बना रहता है। उपन्यास इन छोटी-छोटी घटनाओं का संलिष्ट वर्णन करता है। अतः कथा वस्तु में एक तो आजीवन प्रभाव रखने वाली आधिकारिक कथा वस्तु होती है और दूसरी सीमित किंचित समयावधि के लिये स्मृतियों में बनी रहने वाली और पुनः विस्मृत हो जाने वाली कथा वस्तु प्रासंगिक कथा वस्तु होती है। जिस प्रकार एक सरिता दूसरी सरिता में मिलती है, फिर दोनों सरिताएं किसी बड़ी सरिता में जा मिलती है और फिर वह महासरिता महासागर में अंतर्लीन हो जाती है। ठीक वैसे ही एक छोटी घटना बड़ी घटना में लीन हो जाती है। फिर वे छोटी-बड़ी घटनाएं जीवन में पर्यवसित होकर एक विराट कथानक का रूप ले लेती है और वही कथानक अभिव्यक्त होने के पश्चात् उपन्यास बन जाता है।

उपन्यासकार अपने लेखन में मनचाही शैली का उपयोग कर सकता है व वर्णात्मक, कथानात्मक हो सकती है। भारतीय साहित्य में आख्यानमूलक कथाएं लिखने की आदिकालीन परम्परा रही है। पंचतंत्र और हितोपदेश की कथाएं विश्वविख्यात है और संसार अनेक भाषाओं में उनके अनुवाद उपलब्ध है। भारतवर्ष का पौराणिक साहित्य जिसमें बौद्ध एवं जैन साहित्य भी सम्मिलित हैं, मूलतः कथानक ही रहा है। लेखक वीरेन्द्र कुमार

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जैन ने अपने उपन्यास के लिये उसी को आधार चुना है।

हिंदी उपन्यास यात्रा

भारतेन्दु युग हिन्दी के आधुनिक काल को प्रवर्तक युग कहा जाता है। भारतेन्दु काल में नाटक, कहानी, निबन्ध, गद्य गीत आदि लेखन की प्रवृत्ति जिस तरह से पनपी उसी तरह से कतिपय लेखकों के हृदय में बंगला, मराठी एवं अंग्रेजी उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद करने की कला भी विकसित हुई। इन अनुवादों ने हिन्दी पाठकों के मन में उपन्यास के प्रति अध्ययन का चाव जगाया। उस समय के उपन्यासकार हुए "श्री निवासदास, बालकृष्ण ठाकुर, जगमोहनसिंह मेहता, लज्जाराम शर्मा, धूर्त, रसिकलाल, राधाकृष्णदास, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', किशोरीलाल गोस्वामी, गोपालराम गहमरी"1 आदि खत्रीजी के चन्द्रकान्ता उपन्यास को पढ़ने के लिये कुछ लोगों ने हिन्दी सीखना प्रारम्भ किया। औपन्यासिक विकास का दूसरा चरण प्रेमचन्द से प्रारम्भ होता है। ये मानव चरित्र के कुशल अध्येता थे। उन्होंने समाज के सभी पात्रों का मनोवैज्ञानिक, मनोहारी एवं नगरीय स्त्री-पुरूष की प्रकृतियों एवं प्रवृत्तियों का आकर्षक विवेचन किया है। किसी भी उपन्यास की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि पाठक उपन्यास में चित्रित पात्रों के साथ समत्व एवं तादात्म्य अनुभव कर सके। इस दृष्टि से प्रेमचन्द और उनके युग के अन्य उपन्यासकार पर्याप्त रूप से सफल हुए हैं। "जयशंकर प्रसाद, वृन्दावलाल वर्मा, चण्डीप्रसाद वर्मा, चण्डीप्रसाद मिश्र 'हृदयेश', विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, चतुरसेन शास्त्री, पाण्डेय बैचेन शर्मा 'उग्र', ऋषभचरण जैन, जैनेन्द्र कुमार, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, भवगतीचरण वर्मा 'निराला', राजाराधिका रमण 'यशपाल।"2 आधुनिक युग के उपन्यास शिल्प की विविधता लिये हुए हैं। रांगेय राघव, इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्रकुमार आदि प्रतिकात्मक शैली के उपन्यासकार हैं। यशपाल, राहुल सांकृत्यान आदि साम्यवादी विचारधारा के पक्षधर उपन्यासकार हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास भारतीय अतीत के सांस्कृतिक गौरव को प्रदर्शित करने वाले उपन्यासकार हैं। वृन्दावनलाल वर्मा और आचार्य चतुरसेन शास्त्री तथा गुरूदत्त ने ऐतिहासिक धरातल पर सामाजिक उपन्यास लिखे हैं और पुरातन यर्थाथ को आधुनिक कलेवर प्रदान करने का सफल प्रयास किया है। 'अज्ञेय' के उपन्यास कथाशिल्प के अनुसार अद्वितीय स्थान रखते हैं। वहीं वीरेन्द्र कुमार जैन दोनों ही युगों (आधुनिक युग एवं स्वातंत्र्योन्तर युग) का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका प्रथम मुक्तिदूत लोकप्रिय उपन्यास सन् 1947 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास पर उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

अनुत्तर योगी तीर्थंकर महावीर का अनुशीलन

'अनुत्तरयोगी तीर्थंकर महावीर' वीरेन्द्र कुमार जैन द्वारा लिखित 1500 पृष्ठों का एक विराट उपन्यास 1974 में प्रकाशित हुआ। इस प्रकार वीरेन्द्र कुमारजी के औपन्यासिक शिल्प में हम भारत के दो युगों का प्रतिबिंब देखते हैं। यद्यपि ये उपन्यास पौराणिक शैली में लिखे गये हैं तथापि इस लेखन कला में प्रवाह है, प्रांजलता है, मौलिकता है और सबसे बड़ी बात यह है कि यह उपन्यास भावात्मकता की दृष्टि से अनुपम और प्रगल्भ भी है - जैसा कि श्री ब्रह्मस्वरूप शर्मा ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा' में लिखा है, "वीरेन्द्र कुमार जैन ने

'अनुत्तरयोगी' में महावीर को विशिष्ट सम्प्रदाय की परिधि में रखकर भी उन्हें सार्वभौमिक रूप को प्रकाशित किया है। उन्हें मानव मूल्यों का संरक्षक और अग्रदूत माना है।"3 इस उपन्यास में लेखक ने महावीर के चार विकासशील रूपों का दिग्ददर्शन करवाया है। इसकी मूल कथा सिद्धार्थ एवं त्रिशला के कनिष्ठ पुत्र वर्द्धमान के जन्म से लेकर उनके केवल्य ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् उनके द्वारा आयोजित समवशरण में घटित चमत्कारों के साथ अवसन्न होती है। इस दीर्घकाय उपन्यास के कुछ क्रिया तत्पर पात्रों का चरित्र चित्रण किया है, जिनमें हैं - अभयकुमार, बिम्बिसार, सोमेश्वर, शूलपाणि, इन्द्रभूमि, गौतम आनन्द, गृहपति, त्रिशला, चन्दबाला चेतना, सुज्येष्ठा, आम्रपाली और सुलसा।

उपन्यास में देशकाल का विश्लेषण किया गया है, जिसमें बतलाया गया है कि वर्द्धमानकालीन भारत में बहुदेववाद अपने चरम पर पहुंच चुका था। जनता अलग-अलग सम्प्रदायों का अनुकरण करती थी।

लेखक का उद्देश्य, महान तीर्थंकर महावीर को सम्प्रदाय विशेष से ऊपर उठाकर उनकी सर्वभौमिकता एवं सर्वचिन्तग्राहिता को स्थापित कराना है। उनकी यह पवित्र आकांक्षा रही है कि महावीर समूची भारतीय समाज के हर वर्ग के हृदय में अभिवंदनीय स्थान प्राप्त करें।

विहंगम दृष्टि से देखने पर वीरेन्द्र कुमार जैन दिगम्बर एवं श्वेताम्बर जैन साहित्य के पूर्ण अध्येता रहे हैं। उन्होंने अपने उपन्यास में जैन तीर्थंकर के लौकिक-अलौकिक एवं आध्यात्मिक कृतित्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। उनके साहित्य में लोक जीवन की जो झलकियां उन्होंने प्रस्तुत की हैं। मार्मिक हृदयस्पर्शी आत्ममंथन पाठक को अपने साथ बहा लेती है। कहीं भी ऐसा नहीं लगता है कि लेखक ने लेखन में कोई असाधारण, अस्वाभाविक अथवा अतिरंजक बात कही हो। वीरेन्द्र कुमार की इसी कृति के संबंध में विद्वानों के मंतव्य इस प्रकार है कि उन मंतव्यों से हमें यह विदित होता है कि यह उपन्यास साहित्य प्रेमी पाठकों के मानसों पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में सफल हुआ है। कतिपय विद्वानों ने उपन्यास के बारे में अपना मंतव्य दिया है-

"1. डॉ. बांदिवडेकर सबसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने अनुत्तरयोगी पर निखालिस भारतीय उपन्यास की मुद्रा अंकित की।

2. डॉ.. श्यामसुन्दर घोष ने कहा अनुत्तरयोगी भारतीय संस्कृति का चित्रागार है।

3. डॉ.. विश्वम्भरनाथ उपध्याय ने कहा अनुत्तरयोगी वीरेन्द्र कुमार जैन ने वेद व्यास बनने की कोशिश की है। इसमें महाभारत की यह प्रतिज्ञा स्पष्ट झलकती है कि जो यहां नहीं है, वह कहीं नहीं है, जो जहां भी है, वह सब यहां एक साथ है।

4. डॉ.. लक्ष्मीनारायणलाल ने इसे भारतीय आत्मा का अनादिकालीन महाकाव्य कहा है।4

5.'डा. विवेकीराय ने इसकी विशुद्ध भारतीयता को विस्तार से विवेचित किया।5 वीरेन्द्र कुमारजी जैन का चार विशाल खण्डों में प्रकाशित उपन्यास अनुत्तरयोगी तीर्थंकर महावीर जिसकी प्रशंसा में जैनेन्द्र कुमार ने लिखा है कि "अनुत्तरयोगी वीरेन्द्र ने अपने हृदय की सारी रम्यता के नितरे रस में कलम डुबोकर लिखा है। इसलिये यह वृहद उपन्यास होते-होते महाकाव्य ही बन गया है। तीर्थंकर महावीर की भगवत्ता को वीरेन्द्र की अनन्य निष्ठा और अशेष अर्पिती ने अद्वितीय रूप से मूर्त और प्रत्यक्ष कर दिखाया है। किसी दूसरे के वश का यह कृतित्व

न था महावीर का चरित्र इसमें नाना विरोधाभासों का संगम होने के कारण अनूठा हो उठा है। ग्रन्थ यह, काल को चुनौती देता हुआ जियेगा6

अनुत्तरयोगी : तीर्थंकर महावीर है, तो उपन्यास किन्तु यदि हम काव्यात्मक गद्य महाकाव्य भी कहें, तो वह कथन अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा। हिन्दी साहित्य जगत के मूर्धन्य रचनाकार वीरेन्द्र कुमार जैन की औपन्यासिक कृति अनुत्तरयोगी एक उद्देश्यपरक अनुपम साहित्य रचना है। यह उपन्यास तत्कालीन भारत वर्ष की अतुलनीय सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक विरासत का एक दस्तावेज है। उपन्यास में अनुत्तरयोगी के रूप में तीर्थंकर महावीर की सार्वभौम शाश्वत सम्प्रदाय एवं धार्मिक आचार-विचार से कही अधिक श्रेष्ठ सिद्ध होती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1.हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास. डॉ. चित्रा आनन्द, पृष्ठ 285

2.हिन्दी उपन्यास का विकास - मधुरेश, पृष्ठ 54

3.हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास, डॉ.. चित्रा आनन्द, पृष्ठ 297

4.हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा, ब्रह्मस्वरूप शर्मा, पृष्ठ 85

5.तीर्थंकर पत्रिका मार्च 1984, पृष्ठ 48

6.अनुत्तरयोगी तीर्थंकर महावीर परिशिष्ट, वीरेन्द्र कुमार जैन, पृष्ठ 574